Western Philosophy -Spinoza

Concept of Substance
द्रव्य की अवधारणा

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

बुद्धिवादी दार्शनिकों में स्पिनोजा का स्थान प्रमुख रहा है। इन्होंने अपने दर्शन में अपने पूर्वर्ती विचारक डेकार्ट की परंपरा में रहते हुए देकार्तिया दर्शन से भिन्न अपने दर्शन का रूप प्रस्तुत किया है ।स्पिनोजा के दर्शन का सबसे प्रमुख अंग उनके द्रव्य विचार है जिसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है कि ,"**By substance I understand that which exists itself , and is conceived by , i.e. that doesn't need the conception of any other thing in order to be conceived." अर्थात द्रव्य से मेरा अभिप्राय यह है कि जो अपने अस्तित्व का आधार स्वयं है या जिसके संबंध में विचार करने के लिए या जानने के लिए किसी अन्य भावना की आवश्यकता ना हो** । स्पिनोजा की यह परिभाषा द्रव्य के गुण और उसके स्वतंत्रता को स्वीकार करता है।

स्पिनोजा के अनुसार डेकार्ट की यह गलती थी कि उसने प्राथमिक और गौण दो प्रकार के द्रव्य को स्वीकार किया है ।वस्तुतः द्रव्य की परिभाषा से ही यह स्पष्ट है कि द्रव्य की संख्या एक से अधिक नहीं हो सकती है क्योंकि एक से अधिक होने से उसमें आत्मनिर्भरता का अभाव हो जाएगा ।अतः स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य एक ऐसी सत्ता है जिस पर संसार की सारी वस्तुएं निर्भर है परंतु वह स्वयं किसी पर निर्भर नहीं करता वह स्वयंभू है एवम स्वयंसिद्ध है ।

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य में कोई ऐसा गुण या धर्म नहीं हो सकता जो उसे सगुणी स्वरूप बना सके क्योंकि द्रव्य में गुण का आरोप करना उसे सगुणी बनाना है अर्थात उसके और अभवात्मक रूप को उपस्थित करना है। इसी प्रसंग में स्पिनोजा ने **" Every determination is negation "** कहा है उन्होंने द्रव्य को ईश्वर कहा है और बताया है कि ईश्वर में अनेक गुण है और प्रत्येक गुण उसकी असिमता बतलाते हैं इस प्रकार स्पिनोजा का ईश्वर असीम, शाश्वत तथा स्वयंभू है ,चूंकि ईश्वर अनादि ,अनंत ,सास्वत सत्ता है इसलिए वास्तव में ईश्वर ही है निरपेक्ष द्रव्य है ,इसे छोड़कर दूसरी कोई सत्ता नहीं है ।अतः सभी वस्तुएं ईश्वर ही हैं जिस प्रकार वर्ग या त्रिभुज के तत्व दिक(Space) है उसी प्रकार सभी वस्तुओं

का आधार कारण ईश्वर है अतः स्पिनोजा ने ईश्वर में प्रकृति को नहीं बल्कि प्रकृति में ही ईश्वर को पाते हैं। चुकी प्रकृति है इसलिए प्रकृति के संबंध में ईश्वर को दो प्रकार से पुकारा जा सकता है । स्पिनोजा के अनुसार विशिष्ट वस्तुओं का अपना कोई अस्तित्व नहीं बल्कि सभी वस्तुओं का योगफल ईश्वर ही है। पुनः यदि ईश्वर को सक्रिय ,अंतर्यामी ,अंतरव्यापी कारण समझे तो इस दृष्टिकोण से वह विश्व का पालक तथा प्रकृति का रचयिता माना जा सकता है । पहले दृष्टिकोण से ईश्वर को **Natura Naturata** तथा दूसरे दृष्टिकोण से ईश्वर को **Natura Naturans** कहा जाता है इस प्रकार दोनों ही में विश्व ही नहीं बल्कि उसके स्थान पर ईश्वर है।

स्पिनोजा ने ईश्वर को निर्गुण, निराकार स्वरूप के साथ ईश्वर के असंख्य गुणों के एकरूपता की व्याख्या करने के क्रम में अपने गुण सम्बन्धी सिद्धांत को स्पष्ट किया है । गुणों की परिभाषा देते हुए स्पिनोजा ने कहा है की , "**Attribute is that which the understanding perceives as constituting the essence of the substance " अर्थात गुण से मेरा तात्पर्य ऐसी वस्तु से है जिसे बुद्धि द्रव्य के सार के रूप में ग्रहण करती है ।**स्पिनोजा द्वारा दी गई परिभाषा से स्पष्ट है कि गुण द्रव्य के ऊपर आधारित है।

स्पिनोजा ने अपने द्रव्य संबंधी विचारों को अत्यधिक स्पष्ट करने के लिए आकार(Mode) की व्याख्या की है उसने विश्व के विशिष्ट वस्तुओं को आकार कहा है परंतु विशिष्ट वस्तुएं सीमित है और परम द्रव्य असीमित। अतः प्रश्न है कि असीमित ईश्वर से सीमित विभिन्न वस्तुओं की व्याख्या किस प्रकार हो सकती है ? इस प्रश्न के उत्तर में स्पिनोजा ने आकारों की व्याख्या की है तथा उसका संबंध द्रव्य के साथ स्पष्ट किया है । आकार की परिभाषा करते हुए स्पिनोजा ने लिखा है कि, **"आकार से मेरा तात्पर्य एक द्रव्य के रूप भेदों से है अथवा उनसे जो किसी दूसरी वस्तु में है जिसके माध्यम से इसका चिंतन संभव है।"** इस परिभाषा से स्पष्ट है कि आकार द्रव्य के विकार मात्र हैं इनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता ,यह क्षणिक है ,इसलिए द्रव्य की तरह इसमें सत्यता नहीं है स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य एवं आकारों में वही संबंध है जो समुद्र और उसके लहरों में है जिस तरह समुद्र से लहर का अलग कोई अस्तित्व नहीं होता उसी तरह आकार(Mode) का भी द्रव्य से अलग कोई अस्तित्व नहीं है ।

स्पिनोजा ने आकार को दो भागों में बांटा है - सीमित आकार(Finite Mode) और असीमित आकार (Infinite Mode) ।सीमित आकार वैसे आकार है जो द्रव्य के गुण के आवश्यक रूपांतर हैं वे असीमित आकार पर ही आश्रित हैं ।असीमित आकार जहां शाश्वत है वही सीमित आकार क्षणिक है ।इन दोनों में वही संबंध है जो सामान्य और विशेष में होता है ।

स्पिनोजा ने ईश्वर के गुणों की चर्चा करते हुए असीमित आकार को ईश्वर के गुणों का रूपांतर माना है मनोनुकूल इच्छा तथा बुद्धि असीमित आकार हैं। इस प्रकार हमारे अंदर जो बहुत प्रकार के विचार आते रहते हैं उसमें से कुछ विचार कुछ ही क्षणों के लिए आते हैं तथा फिर मिट जाते हैं विचारों की इस क्षणिक अवस्थाओं को ही हम सीमित आकार कहते हैं अतः स्पष्ट है कि हमारे भिन्न-भिन्न विचार परिवर्तनशील है और क्षणिक भी हैं परंतु जाति के रूप सामान्य के रूप में प्रचलित विचार इसी प्रकार शाश्वत हैं जिस प्रकार मानव जाति शाश्वत है।

स्पिनोजा के दर्शन में सत्ता का क्रमबद्ध स्थान है। द्रव्य या ईश्वर पूर्णरूपेण वास्तविक है इसके बाद गुणों का स्थान आता है जो द्रव्य के बाद वास्तविकता में स्थान रखते हैं तथा द्रव्य के ही आधार पर इनकी व्याख्या संभव है। इसके बाद असीमित आकारों के स्थान आते हैं तथा अंत में सीमित आकारों का स्थान आता है। एक प्रकार से स्पिनोजा के द्रव्य, गुण,आकार आदि विचारों को देखने से ऐसा लगता है की इनके दर्शन शून्यवादी दर्शन है जिसमें द्रव्य को छोड़कर कोई वस्तु सरल है ही नहीं। सीमित प्रकार का अर्थ है संसार के विशिष्ट वस्तुएं जिनकी सत्ता की दृष्टि से कोई अस्तित्व नहीं है जिस प्रकार ग्राफ विभिन्न छोटे-छोटे वर्गों के समूह होते हैं उसी प्रकार सीमित प्रकार का संबंध ईश्वर से है और जिस प्रकार छोटे-छोटे बर्ग की रेखाओं को मिटा देने पर बड़े वर्ग बन जाते हैं अंत में सभी बृहत दिक में विलीन हो जाते हैं उसी प्रकार असीम आकार में यदि रूप रंग आदि समाप्त कर दिया जाता है तो इनका विलयन द्रव्य में हो जाता है ।

स्पष्ट है कि परमार्थिक दृष्टिकोण से सीमित प्रकार अवास्तविक है विश्व में किसी बीच की सत्ता नहीं है और विश्व शून्य के बराबर है परंतु व्यवहारिक दृष्टिकोण से सीमित प्रकार की भी कुछ सत्ता है। अतः स्पिनोजा के द्रव्य एवम उनके प्रकथन में यही अंतर है जो शंकर के ब्रह्म और जगत में।स्पिनोजा ने द्रव्य, गुण और आकार की व्याख्या जिस ज्यामितीय ढंग से करनी चाही उसमें उन्हें उतनी सफलता नहीं मिली **(He falls in the confusion of substance, attributes, modes and their material relations) ।**